ROHTAS MAHILA College SASARAM
Department of History - Subsidary
23-05-2020, B.A.I - [2019-20]
Dr. Satyajeet Sarang [Notes]

[11] सिन्ध पर अरबों का परिणाम :⟹

राजनीतिक प्रभाव [Political Impact]:

सिन्ध पर अरब-विजय के प्रभाव की व्याख्या दो तरह से की गयी है। कुछ इतिहासकार अरब-विजय को प्रभावरहित बताते हैं और कुछ ने उसके प्रभाव का विवरण बढ़ा-चढ़ा कर दिया है। डा० स्टैनले लेन-पूल के अनुसार "सिन्ध पर अरबों की विजय इस्लाम के इतिहास की एक गौण एवं महत्वहीन घटना थी।" सर वूलजे हेग का विचार है कि "भारत के इतिहास की यह एक साधारण घटना थी और उसने इस विशाल देश के सीमवर्ती क्षेत्र के एक छोटे प्रदेश मात्र को प्रभावित किया।" परन्तु राजस्थान के इतिहास के प्रसिद्ध लेखक कर्नल टॉड ने अरब-आक्रमण के प्रभाव की व्याख्या अतिरंजित ढंग से की है।

मुहम्मद-बिन-कासिम के आक्रमण से "समस्त उत्तर भारत दहल गया था।" टॉड का यह विचार युक्तिसंगत नहीं है। अरबों का प्रवेश राजस्थान में नहीं हुआ था। सिंध और

2020/5/23 14:24

पंजाब के दक्षिणी भाग को ही इस्लाम धर्म का ज्वार-भाटा ने कुछ क्षणों के लिए प्रभावित किया प्रोफेसर ए० बी० एम० हबीबुल्ला ने भी अरबों द्वारा सिन्ध विजय के राजनीतिक परिणाम को गौण बतलाया है। "भारत में इस्लाम की एक राजनीतिक शक्ति से उसका कुछ परिणाम नहीं हुआ। उसने भारतीय महाद्वीप के केवल एक सीमान्त का स्पर्श किया और उसने जो मन्द भावोद्दीपन किया था वह शीघ्र विस्मृत हो गया।

इस्लामी राष्ट्रमंडल में अरबों का प्रभाव क्षीण होने लगा, भारत में उसके विस्तार में भूगोल बाधक था। दसवीं शताब्दी तक उसका विजय-कार्य समाप्त हो गया और भारतीय राजा उनको पहले की भाँति साहसी और अनुकूलनीय व्यापारी मानने लगे। राजपूत राज्यों ने अरब आक्रमणकारियों का सामना करने के लिए पूरी तैयारी कर ली। कच्छ में अघोई पर अरबों का आक्रमण असफल रहा था। कन्नौज के शासक हरचन्द के साथ अरबों ने कोई युद्ध नहीं किया था। वस्तुत: अरबों की अपेक्षा तुर्कों ने उत्तर भारतीय राज्यों को अवश्य ही दहला दिया था। इस दृष्टि से वह यह कहा जा सकता है कि भविष्य में तुर्कों द्वारा भारत-विजय के मार्ग को अरबवालों ने प्रशस्त कर दिया। अरब शासन के अन्त होने के बाद भी बहुत-से अरब व्यापारी और सन्त भारत

जाते रहे और उनकी रचनाओं को पढ़कर तुर्कों को भारत-विजय करने में सफलता मिली। इस्लामी साम्राज्य का मुख्य लक्ष्य धर्म-प्रचार था। इस्लामी धर्म का प्रचार सिन्ध में अरबवालों ने किया और

घटनाचक्र के क्रम के अनुसार इस्लाम धर्म की जड़ें भारत में जम गयीं। राजनीतिक और सैनिक दृष्टि से अरबों के आक्रमण का परिणाम भले ही निर्णायक न हो लेकिन इस्लामी संसार के साथ भारत का सम्बध जोड़ने में अरबवालों ने कड़ीका काम किया था। अरब-सत्ता भारत में नष्ट हो गयी। भारतीय भाषा, कला,

रीति-रिवाज तथा जन-जीवन पर स्थायी प्रभाव नहीं पड़ा। उनके द्वारा निर्मित नगर, किला आदि नष्ट हो गये हैं। परन्तु सिन्ध में जिन व्यक्तियों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था, उनका सम्बन्ध मुसलमानों के साथ मध्ययुग के अन्त तक बना रहा और वे भारतीय राजनीति को प्रभावित करते रहे।

2020/5/23 14:25